This question paper contains 4+2 printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **1594**

Unique Paper Code : **213402** **D**

Name of the Paper : **Paper XIII Sanskrit Literature–IV**

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Sanskrit**

Semester : **IV**

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **75**

(Write your Roll No. on the top immediately on receipt of this question paper.)

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

Note : — Unless otherwise required in a question, answers should be written in **Sanskrit** or in **Hindi** or in **English**.

टिप्पणी :— अन्यथा आवश्यक न होने पर इस प्रश्न-पत्र का उत्तर **संस्कृत** या **हिंदी** या **अंग्रेजी** किसी एक भाषा में दीजिए।

Answer *All* questions.

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** की व्याख्या कीजिए : 2×5=10

Explain any *two* of the following :

(क) वसूनि वाञ्छन्न वशी न मन्युना स्वधर्म इत्येव निवृत्तकारणः।

गुरूपदिष्टेन रिपौ सुतेऽपि वा निहन्ति दण्डेन स धर्मविप्लवम्॥

P.T.O.

(ख) अनेकराजन्यरथाश्वसंकुलं तदीयमास्थाननिकेतनाजिरम्।

नयत्ययुग्मच्छदगन्धिरार्द्रताम् भृशं नृपोपायनदन्तिनां मदः॥

(ग) अखण्डमाखण्डलतुल्यधामभिश्चिरं धृता भूपतिभिः स्ववंशजैः।

त्वयात्महस्तेन मही मदच्युता मतङ्गजेन स्रगिवापवर्जिता॥

2. संस्कृत में व्याख्या कीजिए : 8

Explain in Sanskrit :

हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः।

अथवा

(Or)

स किंसखा साधु न शास्ति योऽधिपं हितान्न यः संशृणुते स किंप्रभुः।

सदानुकूलेषु हि कुर्वते रतिं नृपेष्वमात्येषु च सर्वसम्पदः॥

3. भारवि की शैली पर एक लघु निबन्ध लिखिए। 10

Write a short essay on the style of Bharavi.

अथवा

(Or)

किरातार्जुनीयम् में वनेचर द्वारा वर्णित दुर्योधन की कार्यनीति का विवेचन कीजिए।

Discuss the governing style of Duryodhana as described by Vanechara in किरातार्जुनीयम्.

4. निम्नलिखित का अनुवाद कीजिए : 2×6=12

Translate the following :

(क) आस्वादितद्विरदशोणितशोणशोभां

सन्ध्यारुणामिव कलां शशलाञ्छनस्य।

जृम्भाविदारितमुखस्य मुखात्स्फुरन्तीं

को हर्तुमिच्छति हरेः परिभूय दंष्ट्राम्॥

अथवा

(Or)

ये याताः किमपि प्रधार्य हृदये पूर्वं गता एव ते

ये तिष्ठन्ति भवन्तु तेऽपि गमने कामं प्रकामोद्यमाः।

एका केवलमेव साधनविधौ सेनाशतेभ्योऽधिका

नन्दोन्मूलनदृष्टवीर्यमहिमा बुद्धिस्तु मा गान्मम॥

(ख) आलिङ्गन्तु गृहीतधूपसुरभीन्स्तम्भान्पिनद्धस्रजः

संपूर्णेन्दुमयूखसंहतिरुचां सच्चामराणां श्रियः।

सिंहाङ्कासनधारणाच्च सुचिरं सञ्जातमूर्च्छामिव

क्षिप्रं चन्दनवारिणा सकुसुमः सेकोऽनुगृह्णातु गाम्॥

अथवा

(Or)

मुहर्लक्ष्योद्भेदामुहुरधिगमाभावगहना

मुहुः सम्पूर्णाङ्गी मुहुरतिकृशाकार्यवशतः।

मुहुर्नश्यद्बीजा महुरपिबहुप्रापितफले-

त्यहो चित्राकारा नियतिरिव नीतिर्नयविदः॥

5. निम्नलिखित की सप्रसङ्ग व्याख्या कीजिए : 2×8=16

Explain the following with reference to the context :

(क) ऐश्वर्यादनपेतमीश्वरमयं लोकोऽर्थतः सेवते

तं गच्छन्त्यनु ये विपत्तिषु पुनस्ते तत्प्रतिष्ठाशया।

भर्तुर्ये प्रलयेऽपि पूर्वसुकृतासङ्गेन निःसङ्गया

भक्त्या कार्यधुरां वहन्ति कृतिनस्ते दुर्लभास्त्वादृशाः॥

अथवा

(Or)

कामं नन्दमिव प्रमथ्य जरया चाणक्यनीत्या यथा

धर्मो मौर्य इव क्रमेण नगरे नीतः प्रतिष्ठां मयि।

तं संप्रत्युपचीयमानमनु मे लब्धान्तरः सेवया

लोभो राक्षसवज्जयाय यतते जेतुं न शक्नोति च॥

(ख) इह हि रचयन्साध्वीं शिष्यः क्रियां न निवार्यते

त्यजति तु यदा मार्गं मोहात्तदा गुरुरंकुशः।

विनयरुचयस्तस्मात्सन्तः सदैव निरंकुशाः

परतरमतः स्वातन्त्र्येभ्यो वयं हि पराङ्मुखाः॥

अथवा

(Or)

सद्यः क्रीडारसच्छेदं प्राकृतोऽपि न मर्षयेत्।

किमु लोकाधिकं तेजो विभ्राणः पृथिवीपतिः॥

6. 'मुद्राराक्षसम्' के आधार पर 'कृतक-कलह' के महत्त्व का प्रतिपादन कीजिए। 10

Explain the importance of 'कृतक-कलह' in 'मुद्राराक्षसम्'.

अथवा

(Or)

'मुद्राराक्षसम्' का नायक कौन है ? विवेचन कीजिए।

Who is the Hero of the play 'मुद्राराक्षसम्' ? Discuss.

7. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए : 3×3=9

Write short notes on any *three* of the following :

सूत्रधार, नान्दी, भरतवाक्य, नेपथ्य, कञ्चुकी।